© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

स्वामी विवेकानन्द विद्यालय व सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाले संस्कृत विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रो. लीलेश गुप्ता (मार्गनिर्देशक)

पूर्व प्राचार्य, जे.एन.टी.टी.कॉलेज, कोटा

किशन कुमार दाधीच (शोध छात्र)

केरियर पॉइन्ट युनिवर्सिटी, कोटा, (राज.)

शोधसार (Abstract) - बालकों के व्यक्तित्व गुणों एवं समायोजन क्षमता में भिन्नता पाई जाती है जिसका प्रभाव उनकी शिक्षा पर पड़ता है। देश में बालक–बालिकाओं को शिक्षा विविध प्रकृति के विद्यालयों में दी जा रही है। इन विद्यालयों की स्थापना का मूल उद्देश्य कई राष्ट्रीय,राज्यस्तरीय,स्थानीय,भौगोलिक,सांस्कृतिक लक्ष्यों की प्राप्ति रहा है। इनमें से स्वामी विवेकानन्द विद्यालय की प्रकृति भी शैक्षणिक दृष्टि से पिछडे क्षेत्रों में गुणत्तापूर्ण माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध करवाना, वंचित वर्गों के बालक–बालिकाओं की माध्यमिक शिक्षा का स्तर ऊँचा करना। आधुनिकतम तकनीक एवं विशेष सुविधाओं युक्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की स्थापना करना। तथा बालक–बालिकाओं का भौतिक, सामाजिक, नैतिक एवं सर्वांगीण विकास हेतु पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना है। स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय के संस्कृत विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता व व्यक्तित्व गुण भिन्न–भिन्न हो सकते हैं।इस अध्ययन में इन विद्यालयों में अध्ययनरत संस्कृत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों एवं समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करके यह पता लगाने का प्रयास किया गया है, इन दोनों प्रकार के विद्यालयों में पढ़ने वाले संस्कृत विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता तथा व्यक्तित्व गुण किस प्रकार के हैं।

कूट शब्द (Key words): - स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय, संस्कृत विद्यार्थी, व्यक्तित्त्व गुण, समायोजन क्षमता ।

प्रस्तावना (Introduction) -

किसी भी देश के सर्वाङ्गिण विकास व प्रोन्नति का सबसे बड़ा आधार शिक्षा ही है। शिक्षा ही वह नींव है जिस पर राष्ट्र की उन्नति की भव्य इमारत का आधार टिका हुआ है। यदि हमें शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना है तो बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा के लिए गंभीरतापूर्वक सकारात्मक वातावरण बनाना होगा। उस कार्य में शासन, प्रशासन, शिक्षक, समाज एवं अभिभावक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। देश में शिक्षा के सर्वव्यापीकरण में विविध औपचारिक व अनोपचारिक संस्थानों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।विशेष कर राजस्थान राज्य के सन्दर्भ में जहाँ भोगौलिक व शैक्षणिक दृष्टि से पिछडे हुए क्षेत्रों के बालक–बालिकाओं को गुणत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिये विद्यालय व्यवस्था की अभिनव संकल्पना स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालयों की संकल्पना की गई है। इन विद्यालयों नवाचारों के साथ शिक्षा दी जा रही हैं। केन्द्रीय विद्यालयों की रूपरेखा के आधार पर स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के लिये संचालित हैं।

स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालयों के संस्कृत विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता व व्यक्तित्व गुण भिन्न–भिन्न हो सकते है। इन संस्कृतनिष्ठ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों एवं समायोजन क्षमता को परखकर समुचित शिक्षण दिया जा सकता है।अत: इनकी क्षमता व गुणों को परखने के लिये कुछ उद्देश्यों का निर्धारण इस प्रकार किया गया है–

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) -

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाले संस्कृत छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता का पता लगाना।
2. स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय के संस्कृत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों के बारे में पता लगाना।
3. स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय के संस्कृत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों की तुलना करना।
4. स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय के संस्कृत छात्र–छात्राओं की समायोजन क्षमता की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01 स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाले संस्कृत छात्रों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

02 स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाली संस्कृत छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

03 स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाले संस्कृत छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

04 स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाली संस्कृत छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमन (Delimitation)

प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान राज्य के बून्दी के जिले की हिण्डोली व तालेड़ा तहसील में संचालित स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय के कक्षा दस के संस्कृत विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process)

- **शोध विधि** (Research Method)

  प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

- **न्यादर्श** (Sample)

  इसमें असंभव्यता न्यादर्श प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया।

  प्रस्तुत अध्ययन में 02 स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय एवं 02 सामान्य विद्यालय के कक्षा दशवीं में तृतीय भाषा (संस्कृत विषय) लेकर अध्ययनरत 80 विद्यार्थियों (40 छात्र, 40 छात्राएँ) का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।

- **उपकरण** (Tools)

  प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. **समायोजन मापनी** – प्रो. ए.के. सिन्हा एवं प्रो. आर.पी. सिन्हा द्वारा निर्मित।

2. Dimension of Temperament Scale (DTS) डॉ.एन. के. चड्ढा एवं श्रीमती सुनन्दा चान्दना द्वारा निर्मित मापनी।

- **चर** (Variables) – प्रस्तुत शोध में निम्नांकित चर हैं –

  1. **स्वतंत्र चर** – स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय एवं सामान्य विद्यालय के संस्कृत विषय वाले विद्यार्थी।
  2. **आश्रित चर** – समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुण ।

- **सांख्यिकीय विश्लेषण** (Statistical Operations)- प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता की गणना की है।

परिकल्पना क्रमांक - 01

"स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाले संस्कृत छात्रों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।"

सारिणी क्रमांक – 01

स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय एवं सामान्य विद्यालय के संस्कृत छात्रों की समायोजन क्षमता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	प्राप्ताकों का मध्यमान	प्राप्तांकों का प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	df	सार्थक परिणाम
1	स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय	**20**	**27.00**	**7.90**	**2.54**	**38**	**0.05** सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर
2	सामान्य विद्यालय	**20**	**21.25**	**6.24**			

स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय एवं सामान्य विद्यालय के संस्कृत छात्रों की समायोजन क्षमता का सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसके क्रान्तिक अनुपात का मान 2.54 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर प्राप्त मान 2.02 से अधिक है। जो यह दर्शाता है कि दोनों में सार्थक अन्तर है अर्थात् स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय के संस्कृत छात्रों की समायोजन क्षमता सामान्य विद्यालय के छात्रों से अधिक पाई गई। अत: परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

"स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाली संस्कृत छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।"

सारिणी क्रमांक – 02

स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में अध्ययनरत संस्कृत छात्राओं की समायोजन क्षमता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	प्राप्ताकों का मध्यमान	प्राप्तांकों का प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	df	सार्थक परिणाम
1	स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय	20	30.25	5.31	2.57	38	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर
2	सामान्य विद्यालय	20	22.00	6.00			

स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय एवं सामान्य विद्यालय की संस्कृत छात्राओं के समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 2.57 प्राप्त हुआ है। 38 df एवं 0.05 विश्वास स्तर पर तालिका में CR का मान 2.02 है। गणना से प्राप्त मान सार्थक अन्तर हेतु आवश्यक मान से अधिक है। अर्थात् सार्थक अन्तर है स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय की संस्कृत छात्राओं की समायोजन क्षमता उच्च है। अत: परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

"स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाले संस्कृत छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।"

सारिणी क्रमांक – 03

स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में अध्ययनरत संस्कृत छात्रों के व्यक्तित्व गुणों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	प्राप्ताकों का मध्यमान	प्राप्तांकों का प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	df	सार्थक परिणाम
1	स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय	20	108.75	9.01	21.73	38	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर
2	सामान्य विद्यालय	20	88.75	8.55			

स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय एवं सामान्य विद्यालय के संस्कृत छात्रों के व्यक्तित्व गुणों के बीच सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 21.73 है। 38 df एवं 0.05 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से प्राप्त मान अधिक है। अर्थात् सार्थक अन्तर है। अत: परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक - 04

"स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं **के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।"**

सारिणी क्रमांक – 04

स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	प्राप्ताकों का मध्यमान	प्राप्तांकों का प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	df	सार्थक परिणाम
1	स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय	20	107.25	12.37	11.41	38	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर
2	सामान्य विद्यालय	20	92.75	13.36			

स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय तथा सामान्य विद्यालय की संस्कृत छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों बीच सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 11.41 है। 38 df एवं 0.05 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से प्राप्त मान अधिक है। अर्थात् सार्थक अन्तर है। अत: परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत होती है। सह शिक्षा एवं पृथक विद्यालय की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया गया।

निष्कर्ष (Conclusion) :-

प्रस्तुत शोध में संकलित आँकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

1. स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय के संस्कृत विषय वाले छात्रों की समायोजन क्षमता सामान्य विद्यालय के संस्कृत विषय वाले छात्रों से अधिक पाई गई।

2. स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय की संस्कृत विषय वाली छात्राओं की समायोजन क्षमता सामान्य विद्यालय की संस्कृत विषय वाली छात्राओं से अधिक पाई गई।
3. स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय एवं सामान्य विद्यालय के संस्कृत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अन्तर पाया गया। स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालय के संस्कृत विषय वाले छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व गुण सामान्य विद्यालय के संस्कृत विषय वाले छात्र–छात्राओं से बेहतर पाए गए।

सुझाव (Suggestions):-

शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शिक्षक आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, नवीन तकनीकी कौशलों का प्रयोग करते हुए छात्र–छात्राओं को ऐसी शिक्षा प्रदान करें जिससे उनमें सामाजिक अच्छाइयाँ विकसित हो सकें तथा उनमें लोकतान्त्रिक समाजवादी भावना, धर्मनिरपेक्षता जैसे सद्गुणों एवं समायोजन क्षमता का विकास हो सकें।
2. संस्कृतनिष्ठ छात्र–छात्राओं को समान रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर दिया जाना चाहिए।

संदर्भ (References)

1. परमेश्वरन् (1992): किशोरों और वयस्कों की समायोजन क्षमता का अध्ययन।
2. राव, नारायण (1999): विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन।
3. पाठक, सोमदेव (2004): समायोजन के क्षेत्र में लोकप्रिय विद्यार्थियों एवं अस्वीकृत छात्र तथा छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन।
4. मितल,सन्तोष,(2006), संस्कृत शिक्षण : नवचेतना पब्लिकेशन, जयपुर
5. ए.के.सिंह,(2013), उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान: एम.एल.बी.डी. वाराणसी
6. भटनागर,सुरेश (2005),आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।